अध्याय : एक
इस्लाम से पूर्व अरब प्रायःद्वीप

संसार के सभी प्रमुख धर्मों, मजहबों तथा मतों का उदय एशिया (उशस् अर्थात् जहां सूर्य पहले उदय होता है) की गर्म धरती पर हुआ। विश्व के प्राचीनतम हिन्दू धर्म से लेकर विश्व के नवीनतम इस्लाम मज़हब का आविर्भाव यहीं पर हुआ। प्रायः तीन मज़हब – यहूदी, ईसाई तथा इस्लाम, जिनमें परम्परागत निरंतरता रही, परस्पर कटुता तथा भीषण टकराव भी कम न रहा। तीनों ही मज़हब अपार विश्वास (Faith) तथा सम्प्रदायतन्त्र (Theology) पर आधारित हैं। तीनों में दर्शन को प्रमुख स्थान नहीं दिया गया तथा तीनों ने ही अपने प्रसार के लिए राजनीति का सहारा लिया।

ईसाइयत की भांति इस्लाम भी प्रायः एक हाथ में धर्मग्रन्थ तथा दूसरे में तलवार लेकर फैला। पूर्व प्रचलित धारणाओं के विपरीत नवीन पुरातात्विक तथा वैज्ञानिक खोजें यह स्पष्ट करती हैं कि इस्लाम के पहले अरब प्रायःद्वीप का सम्बन्ध विश्व की प्राचीन सभ्यताओं से था। अनेक अरब ग्रन्थों में भारत तथा भारतीयों के प्रति कृतज्ञता तथा सम्मान दर्शाया गया है। ये जहां पश्चिम व पूरब के देशों के लिए एक प्रसिद्ध व्यापारिक मार्ग था वहां ऐराम, शिबम तथा मक्का जैसे प्रसिद्ध धार्मिक तथा समृद्ध नगरों का भी केन्द्र था।

प्राचीन अरब प्रायःद्वीप का स्वरूप

अरब प्रायःद्वीप' का स्वरूप एक अनियमित आयताकार का है जिसके उत्तर में फिलीस्तीन और सीरिया का रेगिस्तान है। पूरब में अलहिराह का राज्य, यूफ्रेटेइस, टिगरिस व फारस की खाड़ी है। दक्खिन में भारतीय सागर तथा अदन की खाड़ी है, तथा पश्चिम में लाल सागर (Red Sea) है। यह प्रायःद्वीप सामान्यतः एक हजार किलोमीटर लम्बा व चौड़ा है। केवल दक्खिन में यमन को छोड़कर सम्पूर्ण क्षेत्र बंजर तथा वर्षा से वंचित है। विस्तृत मरुस्थल होने से यहां अनेक घुमक्कड़ कबीलों का वास रहा, जो भोजन तथा आवास की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे। यहां के लोगों को जीवन यापन के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ा। यमन को छोड़कर अरब प्रायःद्वीप प्राचीन विश्व में प्रायः

अज्ञात रहा।

भौगोलिक दृष्टि से यहां के लोग व्यापार-वाणिज्य के लिए भूमि तथा जल मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कारवां के रूप में आते जाते रहे हैं। यह विश्व का एक प्रमुख व्यापारिक मार्ग था जो भारत व अन्य पूर्वी देशों तथा रोम व अन्य पश्चिमी देशों को जोड़ता था। प्राय: दो रास्ते प्रसिद्ध थे – एक मिस्र के रास्ते व दूसरा फारस की खाड़ी व समुद्र के रास्ते। रेगिस्तान के दुर्गम मार्गों की यात्रा करते समय भी कुछ परम्परागत नियम होते थे, जिसका पालन यात्रियों/व्यापारियों को करना पड़ता था। कुछ निश्चित स्थानों पर ताड़ के वृक्षों की छाया में ठहरने की व्यवस्था तथा जल की व्यवस्था होती थी। कहीं-कहीं मंदिर भी होते थे। रेगिस्तान के अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न कबीलों तथा उनके सरदार का प्रभुत्त्व होता था। प्राचीनतम कबीला बेदूउन (Bedouin) कहलाता था। रेगिस्तान में ऊंटों के लम्बे-लम्बे कारवां एक स्थान से दूसरे स्थान को प्रस्थान करते थे। जल मार्ग से अनेक मल्लाह अथवा नाविक आते थे, भारत के साथ व्यापार के लिए विशेष प्रकार की नावें भी होती थीं।

अरब प्राय:द्वीप में यमन अपनी उर्वरता तथा निश्चित समय पर वर्षा से सिंचित रहा। अत: यहां पर अच्छी जनसंख्या, अनेक नगर एवं कस्बे तथा महत्त्वपूर्ण मंदिर थे। पिल्नी ने शैबा में 60 मंदिरों का वर्णन किया है। यहां के लोग 'हिमयार' कहलाते थे। वे वर्षा के पानी को सुरक्षित रखने में दक्ष थे। उन्होंने मारिब नगर के पूरब में एक विशाल बांध (Dam of Marib) का निर्माण किया था जो पर्वतों के आये पानी को एकत्रित करता था। यह बांध 400 मीटर चौड़ी घाटी में फैला था, जिसके दोनों ओर पर्वत थे। इस जल का प्रयोग विभिन्न रजवाहों के रूप में किया जाता था। अत: इससे इस क्षेत्र में समृद्धि तथा उन्नति थी।

परन्तु कालान्तर में यह बांध प्रकृति प्रकोप अथवा भयंकर बाढ़ का शिकार हुआ था, जिससे बड़ी संख्या में यहां के निवासियों को प्रस्थान करना पड़ा। राजनैतिक हलचलों ने भी यहां के जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया। ऐसा माना जाता है कि बयाजन्टाईन शासकों का यमन के साथ व्यापार के प्रश्न पर, फारस के साथ टकराव हुआ था। उन्होंने रेगिस्तान के मार्ग से व्यापार छोड़कर, लाल सागर में एक विशाल नव बेड़े का निर्माण किया तथा उस मार्ग से व्यापार किया। अत: बांध के नष्ट होने तथा व्यापार की हानि से यमन का महत्त्व कम हो गया।

विश्व प्रसिद्ध नगर ऐराम तथा शिबम

फारस के प्रसिद्ध विद्वान डा० सेफुद्दीन जिलानी[2] (मृत्यु 1972) ने एक प्रसिद्ध अरबी मूल ग्रन्थ की प्रति ओयून अखबर-अल-हिन्द-वास सिन्ध (Oyen Akhbar Al Hind Vas Sindh) जिसका लेखक इब्न-बार (Ibn-Bar) है, उसका हवाला देते हुए बतलाया कि अरब प्राय:द्वीप साम्राज्य में 'ऐराम' था। 'ऐराम' का अरबी अर्थ है "राम का निवास" (the abode of Ram)[3]।इसकी शरदकालीन राजधानी शिबम थी। इसी भांति शिबम जो शिवोअहम् का अरबी रूपान्तर है। शिबम के कारण अरबिया रोम के इतिहासकारों[4] ने 'भाग्यशाली अरब' कहा हैं।

वस्तुत: उपरोक्त दोनों महानगर हजारों वर्षो तक अज्ञात तथा रहस्यमय रहे। प्राचीन विवरणों, अरेबियन नाईट्स तथा बैदउइन कबीलों की लोक कहानियों तथा अनेकों उपन्यासों की कल्पना मात्र ही बने रहे। पवित्र कुरान में वर्णित अरब प्राय:द्वीप के दक्खिन भाग में रूब-अल-खाली (Rub-al-Khali) रेगिस्तान में उबर (Ubar) या वाबर (Wabar) क्षेत्र में एक हजार स्तम्भों या मूर्तियों वाले नगर का वर्णन मिलता है। इसे अरब साम्राज्य की राजधानी ऐराम या इराम या अमाद भी कहा गया है। यह नगर सम्भवत: 3000 वर्ष ई. पूर्व से पहली शताब्दी तक अस्तित्व में रहा। व्यापारिक केन्द्र के साथ प्रसिद्ध व्यापारिक मार्ग पर होने के कारण यह मध्यपूर्व तथा यूरोप में प्रसिद्ध था। कुछ विद्वानों ने इसे एक किले का स्वरूप भी दिया है जहां सौदागर आकर ठहरते थे। परन्तु बाद में यह नगर विनष्ट हो गया।

हज़रत मौहम्मद साहब ने कुरान में ऐराम शब्द का उपयोग केवल एक या दो बार किया है।[5] कुरान में एराम की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। यहां पर असंख्य मंदिरों का वर्णन किया है जो अनेक स्तम्भों पर बने होते थे तथा ऐसे मंदिर जिनके समान पहले कभी नहीं बने थे। एराम के निवासी 'अदीसी' थे जिसका संस्कृत में समानार्थक अर्थ है "वह जो न केवल प्रथम बल्कि पुनर्जन्म में प्रथम है" कहा जा सकता है।

प्रसिद्ध विद्वान अब्दुल युसुफ अली[6] ने कुरान के 89वें अध्याय (सूरा 89-6-8) का अंग्रेजी अनुवाद करते हुए इसका अर्थ निम्न दिया है-

"Seest thou not how thy Lord dealt
with the Ad (People)
of the (city of Iram **with lofty pillars),
The like of which were not produced in (all) the land".**

इसी भांति इस सूरा का अनुवाद प्रसिद्ध विद्वान मोहम्मद मरमाडयूक पिक्टहाल' ने निम्न प्रकार से किया है-

"Dost thou not consider how thy Lord dealt
(the tribe of) A'ad
with many columning Iram,
The like of which was not created in the lands."

यहां यह प्रश्न अवश्य उठता है कि अरब प्राय:द्वीप का इतना प्रसिद्ध नगर होने पर पहली शताब्दी में विलुप्त होने के बाद, अरबों की स्मृति से यह कैसे ओझल हो गया? तथा कुरान शरीफ में भी इसका नाम केवल एक दो बार ही क्यों लिखा गया। निश्चय ही इतने विशाल-व्यापारिक नगर का विनष्ट होना कोई सामान्य घटना न थी। अनेक विद्वानों का मत है कि यह असम्भव है कि इस नगर का नाम प्राचीन पुस्तकों में न हो। सही यह लगता है कि हज़रत मोहम्मद तथा उनके अनुयायियों ने सभी पुस्तकें तथा विवरणों को नष्ट करवा दिया जो इस्लाम से पूर्व के थे तथा जिन्हें जाहिल्या (Jahilayyah) माना गया।

कुछ भी हो, लोक कथाओं में ऐराम नगर नहीं भुलाया जा सका। यह नगर अरब भूगोल वेत्ताओं, पुरातत्त्व ज्ञाताओं तथा विश्व के वैज्ञानिकों की सतत खोज, कौतुहल तथा रूचि का विषय बना रहा।

शिशिर क्षेत्र जहां 12 मीटर रेत के टीले के नीचे खुदाई से नगर की प्राप्ति हुई।

प्रारम्भ में 200 ई. में भूगोलवेत्ताओं ने प्राचीन अरब साम्राज्य का वर्णन करते हुए उबर क्षेत्र' या ऐराम को एक महान व्यापारिक केन्द्र माना है जो प्रमुख व्यापारिक मार्ग पर स्थित था'। माना गया है कि शहद्दाद बिन अद (Shaddad Bin Ad) ने इसे बसाया तो इसके निर्माण करते समय इसे समृद्ध बनाने का पूर्ण प्रयत्न

किया। कालान्तर में एक भयंकर भूचाल से नष्ट हो गया। यह एक ऊंची पहाड़ी के बीच एक विशाल छिद्र (Hole) में पृथ्वी में समा गया। अरबी भाषा में इस छिद्र के लिये 'शीशर' (Shisr) शब्द का प्रयोग किया गया है। अत: जहां यह समा गया वह क्षेत्र भी शीशर क्षेत्र कहलाया।

याकूत अल हमानी (Yaqut-al-Hamani) जैसे भूगोलवेत्ता ने उबर या वाबर क्षेत्र को वह भूमि बतलाया जो अद का भाग थी तथा आज यमन के पूर्वी भाग के रेगिस्तान के रूप में है। कुछ पुरातत्त्ववेत्ताओं का यह निष्कर्ष भी है कि उबर का यह मुख्य केन्द्र था, जहां से व्यापारिक मार्ग उत्तरी अरब प्राय:द्वीप की ओर तथा सुमेरियन सभ्यता की ओर प्राचीन इराक के दक्खिन तक जाता था। अरबी घोड़ों तथा अन्य अरबी वस्तुएं यहां से दूर-दूर तक ले जाते थे।

1973 में सीरिया के प्राचीन नगर इबला (Ibla) की खुदाई से यह भी ज्ञात हुआ कि इस नगर के ऐराम से व्यापारिक सम्बन्ध थे। 1980 के दशक में कुछ विद्वानों ने उबर के Remote Sensing Satellite के माध्यम से, 'नासा' एवं 'स्पोट' की सहायता से इस क्षेत्र की खोज की।
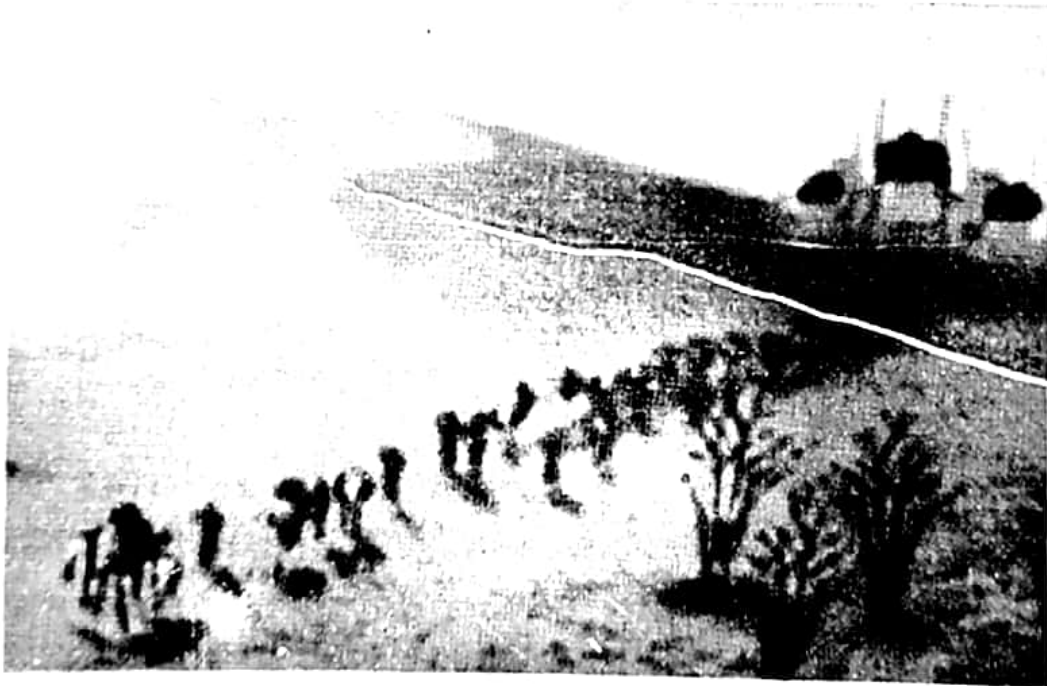
खुदाई से प्राप्त 'ऐराम' का चित्र

1990 का वर्ष विश्व के इतिहास में एक अत्यन्त आश्चर्य तथा कौतुहल का था जब विश्व के समाचार पत्रों में छपा 'Fabled Lost Arabian City found'। वस्तुत: यह धारणा उसी प्रकार की है जैसे भारत के इतिहास में आधुनिक पुरातत्त्ववेत्ताओं तथा वैज्ञानिकों ने विलुप्त सरस्वती नदी की सत्यता को दर्शाया।

बेदुयान कबीलों के प्रयत्नों तथा 'नासा' के प्रयत्नों से शीशर क्षेत्र में एक विशाल छिद्र से 12 मीटर नीचे रेतीले टीलों पर एक बस्ती तथा एक कुआं मिला। साथ ही अनेक मिट्टी के पात्र बर्तन मिले। इस नगर की खोज से अरब सभ्यता की प्राचीनता पर प्रकाश पड़ता है तथा उसके गौरवमय इतिहास पर भी प्रकाश पड़ता है।

इसी भांति दूसरा महत्त्वपूर्ण प्राचीन नगर शिबम था। सम्भवत: अरब साम्राज्य की शीतकालीन राजधानी शिबम थी। ऐराम के पतन से शिबम का भी महत्त्व कम हुआ। इसे इतिहासकार हिट्टन ने बहुत सुन्दर ढंग से लिपिबद्ध किया है तथा कहा शिबम शबम बन गया, अत: इसका पतन हो गया।

सम्भवत: शिबम का नाम शिव के नाम पर रक्खा गया हो। ऐराम से चालीस मील दूर शिबून थी तथा इससे ही कुछ दूरी पर तरायम अर्थात् तरायम की पसंद, जहां शिव अपनी पत्नी, जिसे प्राचीन अरबी में लता के नाम से पुकारते थे, वहां शिव अदृश्य रूप में रहते थे। शिबम का नाम तो आज भी वही है पर शिवून तथा तरायम का नाम सिबून तथा तरीम कहा जाता है।

उपरोक्त संक्षिप्त विवरण से यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि अतीत में ऐराम तथा शिबम प्रसिद्ध नगर थे। ऐराम में विशाल स्थापत्य कलाकृतियां थीं जहां विशाल स्तम्भों तथा विशाल मूर्तियों का वर्णन मिलता है। हज़रत मोहम्मद के पश्चात् मुवैया वंश के काल में कुछ बहुमूल्य पत्थर प्राप्त हुए हैं। निकट काल में भी एक कांसे के शेर की आकृति का सिर का भाग तथा एक कांसे के गटर का कुछ भाग मिला है[8] जो उसकी समृद्धि पर प्रकाश डालते हैं।

मक्केश्वर महादेव का मन्दिर

जहां यमन मुख्यत: व्यापारिक तथा राजनैतिक केन्द्र था, वहां मक्का अरब प्राय:द्वीप की सांस्कृतिक तथा धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र था। यह हेज़ाज के अन्तर्गत है जो यमन के पश्चिम तटीय क्षेत्र तथा सिनाई के दक्खिन भाग में है। मक्का का वैशिष्ट्य एक जमजमा (कुआं) तथा दो प्राचीन व्यापारिक कारवां मार्ग का होना रहा। यहां का प्राचीन मक्का का वर्गाकार मन्दिर, जो पवित्र काले पत्थर से युक्त है, जिसे इब्राहीम तथा उसके पुत्र इस्माइल द्वारा फरिश्ता गैबरिल से लाया हुआ माना जाता है। परम्परा के अनुसार यह पत्थर मूलत: सफेद था पर बार-बार अशुद्ध अथवा पापियों के छूने से काला हो गया था। शताब्दियों से काबा स्मरन अरब कबीलों के धार्मिक आस्थाओं का केन्द्र बना रहा है। ऐसा माना जाता है कि काबा में 360 देवी देवताओं की मूर्तियां थीं।[9]
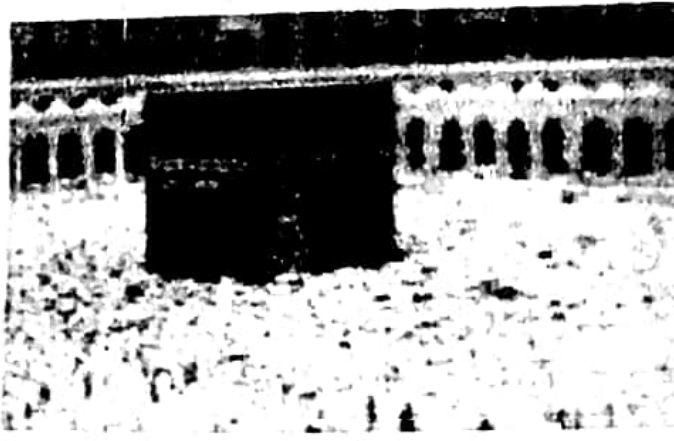
मक्का में काबा

भारतीय परम्परा के अनुसार हरिहर माहात्म्य[10] में मक्का को हरिहर क्षेत्र कहा गया है। यहां विष्णु का एक पद भी बतलाया है। इसमें लिखा है –

एकं पद गयायां तु मक्कायां द्वितीयकम्
तृतीयं स्थापित दिव्य मुक्तौ शुक्लस अति

अर्थात् विष्णु का एक पद गया में, दूसरा मक्का में, तीसरा शुक्ल तीर्थ में स्थापित है। कहा जाता है कि ब्रहम नामक व्यक्ति ने मक्केश्वर की स्थापना की जिसे कुछ विद्वान इब्राहीम कहते हैं। जैसा बताया गया यहां 360 देवी देवताओं की मूर्तियां होती थीं। इसके अलावा नवग्रह की पूजा की जाती थी। प्राचीन मिस्र या भारत की भांति यहां के लोग भी मूर्तिपूजा करते थे। मक्का मुख्यत: एक सांस्कृतिक नगरी थी। वाराणसी या उज्जैन की भांति यहां एक विशाल शिव मंदिर था। यह विद्वानों की नगरी थी। यह नगरी साहित्यिक क्रिया कलापों तथा अनेक उत्सवों तथा मेलों की कार्यस्थली भी थी।

काबा का कवि सम्मेलन

यह रहस्य खलीफा हारू रशीद (786-809) के एक काव्य रशीद संग्रह से ज्ञात होता है, जो पहले उपलब्ध न था और न ज्ञात ही। टर्की के इस्तनबोल (Istanbol) के विशाल पुस्तकालय मक्तब-ऐ-सुल्तानिया में टर्की के सुल्तान सलीम ने 1772 में इस संकलन को खोज निकाला। इसका नाम सैर-उल-उकूल (Sayer-ul-okul) है। इसका प्रथम आधुनिक अनुवाद 1864 में बर्लिन में हुआ तथा 1932 में यह बेरूत (Berut) से प्रकाशित हुआ। इसके तीन भाग हैं – पहले भाग में, इस्लाम से पूर्व के कुछ कवियों का जीवनवृत्त तथा उनकी कवितायें हैं। दूसरे भाग में, हज़रत मोहम्मद की वाणी से लेकर बनी उमैया वंश के खलीफाओं के काल तक की कवितायें हैं। तीसरे भाग में, बाद के कवियों से लेकर हारूं रशीद तक का वर्णन है। वस्तुत: यह एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है जो प्राचीन अरब

के जनजीवन, सामाजिक अवस्था, मक्का मंदिर तथा प्रचलित प्रथाओं पर प्रकाश डालती है।

इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से ओकुल (Okul) मेले में, मक्का में प्रत्येक वर्ष एक विशाल महाकवि सम्मेलन होता था, जिसमें समस्त अरब प्राय:द्वीप के कवियों को बुलाया जाता था। सर्वश्रेष्ठ कविता को सोने के अक्षरों से टांककर एक प्रशस्ति के रूप में मक्का या मक्केश्वर मंदिर के मुख्य विशाल कक्ष में लगाया जाता था। अन्य कविताओं को ऊंट या बकरे की खालों पर, मक्का की बाहरी दीवारों पर लटकाया जाता था। हज़रत मोहम्मद की सेनाओं द्वारा मक्का के पुस्तकालय के जलाने तथा मक्का की लूट के समय, उसके अनेक अनुयायियों ने ये सोने की प्रशस्तियां भी लूट लीं। एक अनुयायी ने सोने की पांच प्रशस्तियां चुरा लीं। खलीफा हारूं रशीद के काल में उपरोक्त अनुयायी के तीसरी पीढ़ी के वंशजों ने खलीफा से भारी पुरस्कार पाने की चाह से पांचों सोने की प्रशस्तियां व 18 अन्य चमड़े पर लिखी कवितायें प्रसिद्ध कवि अबू अमीर अब्दुल असमाई (Abu Amir Abdul Asamai) को भेंट की। इस प्रशस्ति में भारत के सम्राट विक्रमादित्य को भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इसमें लिखा है, "भाग्यवान वह है जो राजा विक्रमादित्य के काल में रहे। वह एक योग्य, कर्त्तव्यनिष्ठ, प्रजा हितैषी राजा है। हम अंधेरे में थे, विक्रमादित्य ने ज्ञान का दीपक जलाया''।

मूल शब्दावली है –

Itrashaphai Sautu Bikramatul Phahalameen Karimun Yarthapeeha wayorassaru Bihillahaya samimin Ela Motakabheuaran, ..hillaha Yuhee Qaid Min Howa Yaphkharu Phajjal Asari Nahano ..sium Baysayhaleen Yaridun Biabin Kajan Binejakhlaru yaho Sabdunya Kanateph Nalenphi Bijehalim, Atadari Bilala Masaruddan Phakef Tasebehu Kaunm Eja Majakarelhade Walhade, Ashmimon, Burukan Phehaye Jaunnabilamerey Bikvemetoon. (Saerkul/Okul).''

पी.एन. ओक ने इसका निम्न अंग्रेजी अनुवाद दिया है –

(Fortunate are those who were born (and lived during king Vikram's reign) He was a noble, generous, dutiful ruler, devoted to the welfare of his subjects. But at that time we Arabs, oblivious of God were lost in sensual pleasures. Plotting and torture were rampant (amongst us). The darkness of ignorance had enveloped our country. Like the lamb struggling for her life in the cruel paws of a wolf. We

Arabs were caught up in ignorance. We had strayed from peaceful orderly life through our ignorance. The whole country was enveloped in a darkness as intense as on a new moon night. But the present dawn and pleasant sunshine of education is the result of the favour of that noble King Vikram whose benevolence supervision did not lose sight of us foreigners as we were. He spread his sacred religion amongst us, and scholars from his own country. These scholars and preceptors through whose benevolence we were once again made cognisant of the presence of God, introduced to "His sacred knowledge, and put on the road to truth, had come to our country to preach their religion and impart education.

उपरोक्त उद्धरण एक महान दस्तावेज है, एक महान सन्देश है जो पश्चिम एशिया में भारतीय संस्कृति तथा धर्म का प्रसार स्पष्ट करता है। वस्तुत: अरब प्राय:द्वीप के ये सभी भाग भारतीय संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित तथा ओत-प्रोत थे। सम्राट विक्रमादित्य ने धर्म तथा ज्ञान का दीपक इस भूभाग में फैलाकर यहां की अज्ञानता का अन्धकार दूर कर, यहां नवजीवन का संचार किया। यह कविता कवि जराहन बिनतोई द्वारा सम्राट विक्रमादित्य का यशोगान, शासन की श्रेष्ठता तथा महानता को दर्शाती है। अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, कुदादिग्नन, इरानाम, इराक अर्बस्थान सभी भारतीय संस्कृति के केन्द्र रहे। सभी स्थानों पर भारतीय विद्वानों, वीरों तथा ऋषि-मनीषियों द्वारा ज्ञान फैला।

उपरोक्त पांच स्वर्ण जटित प्रशस्तियों में एक साहित्यिक कवि जराहन विनतोई (Jarrahan Bintoi) था, जिसने लगातार तीन वर्षो तक सम्मेलन में पुरस्कार प्राप्त किये थे। वह हज़रत मोहम्मद से 165 वर्ष पूर्व रहा था। उसकी भारत के यशोगान के सन्दर्भ में कुछ पंक्तियां हैं जो दिल्ली के लक्ष्मीनारायण मंदिर (बिरला मंदिर) में गीता उपवन में उद्धरित हैं। पंक्तियां इस प्रकार से हैं -

Aye Mubarakel araz yu saiye noha milan hinde
va aradakallah maniyonanjel jika ratun (1)
vahal tajalliyatun enane sahabi akhaatun jikata
vahaje hi yonajjelurrasul milan hindatun (2)
yekulunallahah ya ahajal araja alamu kullahum
fattaben jikaratul veda hakkuna majam yoliajjelatun (3)
Va hova alamussam vala yegura mehallaha tanojilana
Faainoma ya aravaiyo muttabean yo basseri yo najatun (4)

Va isanen huma rik atar nasihim ka akhavatun
Va asnata ala ruden vahova masaeratun (5)
इसका अंग्रेजी में अनुवाद इस प्रकार किया गया है –

Virtuous Hindu land : Thou art fortunate : Because the Lord had chosen you for bestowing his wisdom and knowledge. His knowledge, which illumine the world like the four lamp posts, is revealed in four forms through Hindu Sages. The Lord commanded the entire mankind to follow the Vedas which contained his knowledge and lead their lives according to them. That store house of knowledge the same are house the yazur is the Lord's boon. Hence, brothers ! look at them with reverence, because they show the path to salvation. Of them the two - the Rik and Atar (the Rig and Atharva Vedas) teach us brotherhood. Once who is illuminated by them could never go back to darkness.[12]

इतना ही नहीं, हज़रत मोहम्मद के पिता के बड़े भाई ने जिनका नाम उमर-बिन-हाशम (Umar-Bizn-e-Hassham) था, शिव की स्तुति में कई कवितायें लिखी थीं। उन्होंने इस्लाम मज़हब स्वीकार करने से इंकार कर दिया था। अत: कुछ मुसलमान द्वेषवश उन्हें अबू जिहाल अर्थात् अज्ञानता का पिता कहते थे। वे एक महाकवि भी थे। भारत के बारे में उन्होंने निम्न कविता अरबी में लिखी।[13] यह कविता भी दिल्ली के लक्ष्मी नारायण मंदिर में स्थित बगीचे में उल्लेखित है।

Kaphavik Jikranin almina tab aseru,
Kalban amatatul hava-va tajakkaru (1)
Vamtaje Kero ha udana elalavadar dilvora
Valukayane jata allahe youn aba aseru (2)
Va ahaluloha ajaha armimana Mahadevo,
Manzil ilmuddine minhama, Vasayattaru (3)
Va Sohabi, Keyama ki makamila Hinde youmana,
Va yakuilana latchojana pha innaka lavajjaru (4)
Ma assayare aravalakun hasanana Kullahum,
Najumuta ajaate sufa gabul Hindu (5)
इसका अंग्रेजी अनुवाद है –

(Is there any possibility to turn to goodness for the repentent man who has earlier led his life in sin and profligacy and forgone his

life in giving vent to his anger and satiating physical desires? Yes, there is. If he could once with true heart worship Mahadeva, he could reach the pinnacle of righteous path. Ah Lord! Bestow me a day's life in Hindu land in exchange for my entire life. Why because, man reaching there could achieve redemption. By a pilgrimage to that land one acquires the merit of auspicious deeds : gets the good association of ideal teachers.)

अत: अरब की दशा इस्लाम से पूर्व शांति तथा व्यवस्था की थी। वस्तुत: इस दिशा में इतिहासकारों द्वारा इस क्षेत्र में खोज की आवश्यकता है। इस दृष्टि से तत्कालीन अरबी में लिखे ग्रन्थ ज्यादा निष्पक्ष तथा सच्चाई के निकट होंगे। नि:सन्देह प्राप्त उपरोक्त उद्धरणों से इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका तथा इन्साइक्लोपीडिया इस्लामिया के कथन तथा खोजों पर प्रश्न चिह्न लग जाते हैं।

सम्राट विक्रमादित्य द्वारा सांस्कृतिक विजय

उपरोक्त उद्धरणों से अरब प्राय:द्वीप से भारत के सांस्कृतिक सम्बन्धों का पता चलता है। यह सर्वविदित है कि समय समय पर भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमा से भारत पर अनेक विदेशी आक्रमण होते रहे। विक्रमादित्य ने अपनी वीरता तथा शौर्य का परिचय देते हुए इनसे संघर्ष किया। उसने लगभग 77 वर्ष ई.पू. कंधार व बेबिलोन को विजित कर अरेबिया पर भी आक्रमण किया। उसने वहां की धार्मिक तथा सांस्कृतिक आस्थाओं तथा परम्पराओं का सम्मान करते हुए अंस्तोलिया जीतते हुए वहां अनेक सुधार किये। उसका सम्मान एक विजेता के रूप में न होकर एक स्वतन्त्रता के प्रहरी के रूप में हुआ। उसे 'आर्यवृत्त का शासक' कहा गया। अरबो, पारसियों, कुर्द, हूणों तथा यहूदियों ने उसका सम्मान किया। उसने अरब में ज्ञान का दीपक जलाया। वैदिक तथा भारतीय पौराणिक संस्कृति का प्रसार किया।

उसने ब्रह्मा तथा महेश के मंदिर का पुनर्निर्माण किया। ज्योतिर्लिंग की स्थापना की। बेबिलोन, अर्बस्थान, फारस व अन्तोलिया में कई मंदिर स्थापित किए, शिक्षा का प्रसार किया। चार वर्ष के निरन्तर संघर्षों से ग्रस्त पश्चिमी एशिया (वर्तमान मध्य पूर्व) के क्षेत्र में शांति और व्यवस्था स्थापित की। वह एक वर्ष और रहा जब तक कि महादेव का मंदिर पूर्णत: पुन: निर्मित नहीं हो गया। अंतोलिया के एक व्यक्ति को वहां का गवर्नर बनाकर वह भारत लौटा। लेकिन लगभग चालीस वर्ष बाद ही अर्थात् 33 वर्ष ई.पू. रोमन साम्राज्य ने आक्रमण किया

तथा अन्तोलिया पर वैदिक प्रभाव कम हो गया।

मक्का में काबा से प्राप्त विक्रमादित्य के अभिलेख (Inscription) से जिसका वर्णन Sayar-ul-Okul में किया गया, कोई भी सन्देह नहीं रह जाता कि किस प्रकार विक्रमादित्य ने अरब प्राय:द्वीप को प्रभावित किया था। इससे लगता है कि काबा मूलत: एक हिन्दू मंदिर था।[14] हाल में भी कुवैत में वहां के पुरातत्त्व विभाग ने एक सोने की गणेश की मूर्ति प्राप्त की है, जो निश्चय ही भारतीय सभ्यता के अरब के साथ दृढ़ सम्बन्धों को दर्शाता है।

कालान्तर में परस्पर वैमनस्य तथा कटुता को लेकर हज़रत मोहम्मद साहब का कुरेशी कबीले से इतना विरोध बढ़ा कि मक्का युद्ध का अखाड़ा बन गया। इतना ही नहीं, हज़रत मोहम्मद साहब को कुछ समय के लिए मक्का से भागना पड़ा। परन्तु मदीने के लोगों ने उनकी मदद की। वे दस साल वहां रहे। वे अपने उद्देश्य में सफल हुए तथा उनके प्रयास से मक्केश्वर या काबा को छोड़कर शेष मूर्तियां हटा दी गई। वहां के पूर्व इतिहास, साहित्य तथा मूल साधनों को नष्ट कर दिया गया। मूर्तियों के अस्तित्त्व को ही नष्ट नहीं किया बल्कि मूर्तियों के वर्णन तक को योजनापूर्वक हटा दिया गया।

धार्मिक तथा सामाजिक दशा

इस्लाम से पूर्व समस्त अरब प्राय:द्वीप में प्रचुर मात्रा में मूर्तिपूजा प्रचलित थी। कुरान की आयतों से भी ज्ञात होता है कि मूर्तिपूजा का अरब में सर्वाधिक प्रचलन था। प्रत्येक कबीले की अपनी मूर्तियां थीं। कुछ पूजा की मूर्तियां धातु अथवा लकड़ी की, कुछ पत्थरों की, तथा कुछ अनगढ़े पत्थरों के रूप में थीं। यमन में सुन्दर मूर्तियां बनी होती थीं जबकि हेज़ाज नज्द व किन्धा में इतनी बढ़िया मूर्तियों की प्रतिमाएं न थीं। कुरेश कबीले की मूर्तियां सोने चांदी की भी होती थीं। काबा भी इनके ही क्षेत्र का प्रमुख स्थान था। कुछ मूर्तियां व्यापारी अपने कारवां के साथ भी रखते थे।

धार्मिक दृष्टि से इस्लाम से पूर्व अरब प्राय:द्वीप में यहूदी, ईसाइयत तथा हिन्दू धर्म का प्रभाव था। धार्मिक रीतिरिवाजों में विविधता थी।

अरब प्राय:द्वीप में सामाजिक दृष्टि से अन्धविश्वासों तथा बाहरी आडम्बरों का बोलबाला था, लोगों में शराब का व्यसन था, परन्तु महिलाओं की दशा अपेक्षाकृत अच्छी थी।[15] कुछ महिलाएं यहां स्वतन्त्र शासिका रही थीं। कुछ शिक्षा तथा ज्ञान के क्षेत्र में विदुषी थीं। उन्हें अपने पति चुनने का अधिकार था। वे

स्वतन्त्र रूप से निर्भीक होकर अपना व्यापार कर सकती थी। उदाहरणत: खदीज़ा का विवाह हज़रत मोहम्मद साहब से हुआ जो स्वयं एक समृद्ध महिला तथा सौदागर थी तथा उसने अपनी इच्छा से ही पति चुना था। हिन्द नामक महिला जो हज़रत मोहम्मद के शत्रु अबू सूफयत की पत्नी थी, जो स्वयं लड़ाई के रणक्षेत्र में गई थी। अबू सूफयान के मक्का के समर्पण के समय भी उसने विरोध किया था। बहुविवाह प्रथा न थी। परदे की प्रथा न थी। तलाक अज्ञात था। गुलामी की प्रथा थी परन्तु उसका वीभत्स स्वरूप[16] नहीं था, जो बाद में दिखलाई देता है। अनेक प्रथायें अरब तथा पश्चिम एशिया में भारत जैसी थीं।